### व.व.अ.सं., जोरहाट ने जलवायु परिवर्तन पर चतुर्थ क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन का आयोजन किया

भा.वा.अ.शि.प.-वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट (असम) ने 11 अगस्त, 2023 को 'जलवायु परिवर्तन प्रभाव, अनुकूलन और भेद्यता: पूर्वोत्तर भारतीय परिप्रेक्ष्य' विषय पर चतुर्थ क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन (आरआरसी) आयोजित किया। सम्मेलन का उद्घाटन श्री अरुण सिंह रावत, आईएफएस, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा किया गया। सम्मेलन में डॉ. रत्नाकर जौहरी, आईएफएस, डीडीजी ( आरईएस), भा.वा.अ.शि.प.; डॉ. सुमित चक्रवर्ती, एडीजी ( एम एंड ई), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून; डॉ. ए. बाबू, निदेशक, टोकलाई चाय अनुसंधान संस्थान, जोरहाट असम; डॉ. समरेंद्र हजारिका, प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर आरसी फॉर एनईएच, मेघालय, डॉ. सोनाली घोष, आईएफएस, सीसीएफ सह सीईओ, असम एग्रोफोरेस्ट्री डेवलपमेंट बोर्ड, गुवाहाटी, श्री कुश रॉय, डीसीएफ, त्रिपुरा, एनजीओ सदस्य, व.व.अ.सं. के वैज्ञानिक और अधिकारी ने भाग लिया। इसमें विभिन्न उत्तर-पूर्वी राज्यों के वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी और अनुसंधान संस्थानों के वैज्ञानिक भी वर्चु अली शामिल हुए।

डॉ. आर.के. बोरा, निदेशक, भा.वा.अ.शि.प.-व.व.अ.सं., जोरहाट ने स्वागत भाषण दिया और सम्मेलन के उद्देश्य के बारे में जानकारी दी। अपने उद्घाटन भाषण में, श्री रावत ने जलवायु परिवर्तन पर बहु-विषयक दृष्टिकोण के साथ मुद्दों को संबोधित करने पर जोर दिया। उन्होंने हितधारकों की आवश्यकता के आधार पर राज्य या क्षेत्र-विशिष्ट परियोजना के निर्माण पर प्रकाश डाला।

पहली तकनीकी प्रस्तुति संस्थान के अनुसंधान और विस्तार रणनीतियों पर श्री आर.के. कलिता, प्रमुख, विस्तार प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प.-व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा दी गई थी। उन्होंने पिछले आरआरसी की अनुशंसाओं पर की गयी कार्रवाई के बारे में भी बताया। डॉ. ए. बाबू, निदेशक, टोकलाई चाय अनुसंधान संस्थान, जोरहाट ने उत्तर-पूर्व भारत में पारिस्थितिक तंत्र पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और अनुकूलन रणनीतियों पर व्याख्यान दिया। डॉ. समरेंद्र हजारिका, प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर-रिसर्च काम्प्लेक्श फॉर एनईएच क्षेत्र, उमियाम, मेघालय ने मृदा स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. सोनाली घोष, आईएफएस, सीसीएफ, रिसर्च, असम ने एनई इंडिया में ट्री आउटसाइड फॉरेस्ट (टीओएफ) के प्रबंधन पर एक व्याख्यान दिया। डॉ. प्रसेनजीत सैकिया, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-एनईआईएसटी, जोरहाट ने औद्योगिक प्रदूषण मूल्यांकन और जलवायु परिवर्तन शमन: उत्तर पूर्व भारत का एक परिप्रेक्ष्य पर अपना व्याख्यान दिया। सम्मेलन का समापन आरआरसी की सिफारिशों और निदेशक, भा.वा.अ.शि.प.-व.व.अ.सं., जोरहाट (असम) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

# जलवायु परिवर्तन पर चतुर्थ क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन 2023

#### GLIMPSES OF THE CONFERENCE



























































## जलवायु परिवर्तन पर चतुर्थ क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन 2023











# বৰ্ষাৰণ্য প্ৰতিষ্ঠানত জলবায়ু সম্পকীয় সন্মিলন

যোৰহাটঃ ১১ আগষ্টঃ যোৰহাটৰ বৰ্ষাৰণ্য গৱেষণা প্ৰতিষ্ঠানত আজি উত্তৰ-পূব ভাৰত সন্দৰ্ভত জলবায়ু পৰিৱৰ্তনৰ প্ৰভাৱ, অভিযোজন আৰু দুৰ্বলতা' শীৰ্ষকচতুৰ্থ আঞ্চলিক গ্রেষণা সন্মিলনখনৰ সামৰণি পৰে। এই সন্মিলনখন উদ্বোধন কৰে ডেৰাডনত অৱস্থিত ভাৰতীয় বন গৱেষণা তথা শিক্ষা পৰিষদৰ সঞ্চালক প্ৰধান অৰুণ সিং ৰাবাটে। প্ৰতিষ্ঠানৰ সঞ্চালক ৰাজীৱ কুমাৰ বৰাৰ আদৰণী ভাষণেৰে আৰম্ভ হোৱা সন্মিলনত ডেৰাডুনৰ ৰত্নাকৰ জহৰি, চুমিত চক্ৰৱতী, টোকোলাই চাহ গৱেষণাৰ সঞ্চালক এ বাবু, মেঘালয়ৰ ভাৰতীয় কৃষি গৱেষণা প্ৰতিষ্ঠানৰ সমৰ शाक्षिका, অসমৰ জ্যেষ্ঠ বন বিষয়া সোণালী ঘোষ, যোৰহাট নিষ্টৰ বিজ্ঞানী প্ৰসেনজিৎ শইকীয়া, ত্ৰিপুৰাৰ বন বিষয়া কুশ ৰয় আদিৰ লগতে প্ৰতিষ্ঠানৰ সকলো বিজ্ঞানী, বিষয়া, গৱেষণা কৰ্মী আদিয়ে অংশগ্ৰহণ কৰে। ইয়াৰ বাহিৰে virtual ব্যৱস্থাৰ জৰিয়তে অৰুণাচল প্ৰদেশ, মেঘালয়, নগালেণ্ড, ছিঞ্চিম, মিজোৰাম আদিৰ জ্যেষ্ঠ বন বিষয়াই ভাগ লয়। প্ৰতিষ্ঠানৰ সম্প্ৰসাৰণ বিভাগৰ জ্যেষ্ঠ বিজ্ঞানী ৰাজীৱ কুমাৰ কলিতাই প্ৰতিষ্ঠানৰ গৱেষণা তথা সম্প্ৰসাৰণ ক্ষেত্ৰ খনত হোৱা প্ৰগতিৰ বিষয়ে তত্ত্বমূলক presentation দিয়ে। উত্তৰ-পূবৰ সাত খন ৰাজ্যৰ বন বিষয়াসকলে নিজৰ নিজৰ ৰাজ্যৰ বনৰ লগত জড়িত বিভিন্ন সমস্যা আৰু এইবোৰৰৰ সমাধানৰ বিষয়ত বক্তব্য আগবঢ়ায়। টোকোলাইৰ সঞ্চালক বাবু, কৃষি বিজ্ঞানী হাজৰিকা, বন বিষয়া ঘোষ আৰু নিষ্টৰ বিজ্ঞানী শইকীয়াই বিভিন্ন বিষয়বস্তুৰ বিষয়ত বক্তৃতা আগ বঢ়ায়। সন্মিলনৰ অন্তত recommendationৰ বিষয়ত আলোচনা কৰা হয়।

### **Aug 12, 2023**



#### RFRI, Jorhat organizes 4thregional research conference on climate change

Vulnerability: Northeast Indian Perspectives'. The Conference was inaugurated virtually by Arun Singh Rawat, IFS, Director General, ICFRE, Dehradun. The Conference was attended by Dr. Ratnakar Jauhari, IFS, DDG (Res), ICFRE; Dr. Sumit Chakraborti, ADG (M&E), ICFRE, Dehradun; Dr. A. Babu, Director, Tocklai Tea Research Institute, Jorhat Assam; Dr. Samarendra Hazarika, Principal Scientist, ICAR RC for NEH, Meghalaya, Dr. Sonali Ghosh, IFS, CCF cum CEO, Assam Agroforestry Development Board, Guwahati, Kush Roy, DCF, Tripura, NGO Members, Scientists and Officers of RFRI. It was also joined virtually by senior Officers of the Forest Department of different North-Eastern states and Scientists of Research In-

Dr. R. K. Borah, Director, ICFRE-RFRI, Jorhat delivered the welcome address and briefed about the purpose of the Conference. In his inaugural speech, Rawat emphasized on addressing issues on climate change with a multi-disciplinary approach. He highlighted on the formulation of state or region-spe cific projects based on the need of stakeholders.

Dr. Ratnakar Jauhari, IFS, DDG (Res), ICFRE, and Dr. Sumit Chakraborti, ADG (M&E), ICFRE, Dehradun also spoke at the inaugural session.

The first technical presentation was delivered by R. K. Kalita, Head, of Extension Division, ICFRE-RFRI, Jorhat on the research and extension strategies of the Institute. He also spoke about the action taken on the recommendations of the last RRCRepresentatives from different State Forest Departments and industries shared their research issues and urged for possible collaboration with ICFRE-RFRI.

